: पंचम अध्याय :

हिन्दी कहानी साहित्य में रांगेय राघव का योगदान।

: पंचम अध्याय :

हिन्दी कहानी साहित्य में रांगेय राघव का योगदान

अ. रांगेय राघव पूर्व हिन्दी कहानी।

ब. रांगेय राघव और समकालिन लेखक।

क. रांगेय राघव की कहानियों का अलगपन।

ड. रांगेय राघव का हिन्दी कहानी साहित्य में योगदान।

निष्कर्ष ।

: पंचम अध्याय :

हिंदी कहानी साहित्य में रांगेय राघव का योगदान ।

कहानी लोकप्रिय एवं महत्वपूर्ण साहित्य विधा है। कहानी विधा विश्व के प्राय: सभी देशों के उपलब्ध प्राचीन साहित्य में मिलती है। कहानी में लोक-कल्याण की भावना और लोकरंजन का सनन्वय है। कहानी कहने और सुनने की प्रवृत्ति बहुत प्राचीन है। भारतीय साहित्य में वेद, उपनिषद, पंचतंत्र आदि में हिंदी कहानी का स्वरूप दिखाई देता है। इसमें उपदेश देने का या धार्मिक ग्रन्थों का रोचक स्पष्टीकरण है। आधुनिक हिंदी कहानी सिर्फ मनोरंजन या किसी आदर्श को प्रस्तुत करने तक सीमित न रहकर जीवन के यथार्थ से जुड़ी हुई दिखाई देने लगी। कहानी पढ़ने या सुनने की मनुष्य की स्वाभाविक प्रवृत्ति है। इसीलिए कहानी विधा का विकास हुआ। हिंदी कहानी को जीवन के यथार्थ से जोड़ने का श्रेय प्रेमचंद जी को है।

अ. रांगेय राघव पूर्व हिन्दी कहानी :-

हिंदी में गद्य का प्रारंभ अंग्रेजों के आगमन, प्रेस की स्थापना एवं नए विचारों की हवा चलने के साथ हुआ। रांगेय राघव पूर्व हिंदी कहानी में अनेक कहानीकार आते है, उनमें से प्रमुख कहानीकारों का सामान्य परिचय।

1) प्रेमचंद :-

प्रेमचंद का कहानी-साहित्य इतना विशाल और विस्तृत है कि उसमें समूचा एक युग समा गया है। प्रेमचंद ने हिंदी कहानी को जीवन के निकट लाकर उसे आदर्शवाद से मुक्ति दी। उन्होंने अपने प्रारंभिक कहानियों में आदर्शोन्मुख-यथार्थवाद का चित्रण किया। तत्कालिन समाज में व्याप्त जनमानस की समस्याओं को प्रेमचंद ने अपनी कहानियों का विषय बनाया। समाज के निम्न वर्ग की विविध समस्याओं, उसके जीवन के विविध रूपों आदि को प्रस्तुत करते हुए प्रेमचन्द जी अपने आदर्शवादी दृष्टिकोण का संकेत करते है। उनकी दृष्टि इतनी पैनो है कि समाज का कोई रूप उनसे छिपा नहीं है। तांगेवाला, किसान, श्रमिक, विद्यार्थी, डाक्टर, वकील, व्यापारी, अधिकारी आदि के विविध रूपों को उन्होंने अपनी कहानियों

में चित्रित किया है। उन्होंने अपनी कहानियों में साहूकारी समस्या, जमींदारी समस्या, नारी की विभिन्न समस्याएँ, आर्थिक विषमता, समाजिक विषमता, छुआछूत समस्या आदि समस्याओं को चित्रित किया। इसमें `पंच परमेश्वर`, `जनक का दरोगा`, `बड़े घर की बेटी`, `ईदगाह`, `पूस की रात`, `शतरंज के खिलाडी`, `बड़े भाई साहब`, `कफन`, `ठाकुर का कुआँ` आदि प्रमुख कहानियाँ है।

2) जयशंकर प्रसाद :-

प्रेमचंद के बाद कहानी क्षेत्र में प्रसादजी का आगमन हुआ। उन्होंने ऐतिहासिक विषयों को अपनी कल्पना के माध्यम से अपनी कहानियों में प्रस्तुत किया है। उनकी कहानियों में यथार्थ के तन्तु के सहारे आदर्श का प्रतिपादन हुआ है। इनकी कहानियों में घटनाओं का विवरण तथा स्थूल समस्याओं का चित्रण उतना विस्तार से नहीं मिलता जितना की मानसिक व्यापार आदि का। कलात्मकता की दृष्टि से प्रसाद जी अत्यन्त सफल कहानीकार कहे जा सकते है। छाया, प्रतिध्वनी, आकाशद्वीप, आन्धी और इन्द्रजाल इनके पाँच कहानी संग्रह है। प्रसादजी की कहानियों का प्रमुख स्वर रोमांस और प्रेम है, परन्तु राष्ट्रीय क्षेत्र में राष्ट्र-प्रेम के सम्मुख व्यक्ति-प्रेम को बलिदान के रूप में ही आप प्रस्तुत करते है। `स्वर्ग के खंडहर में` तथा `देवदासी` में प्रसादजी के मानववाद की अभिव्यक्ति हुई है। `मधुआ`, `दासी`, `पुरस्कार`, `सलीम`, `गुंडा`, `सालवती` आदि कहानियों में `वेदना, कसक, करूणा के साथ ही संकल्पशक्ति और कर्मण्यता का संदेश भी निहित है। प्रसादजी आचार और नैतिकता की परीक्षा ग्रंथो की कसौटी पर करने के पक्षपाती नहीं थे। वे मानव के विवेक को ही इसका निर्णायक मानते थे। `पाप की पराजय`, `देवरथ` आदि कहानियाँ इसका प्रमाण है।

3) जैनेन्द्रकुमार :-

हिंदी कहानी के विकास में जैनेन्द्रकुमार का महत्वपूर्ण योगदान है। जैनेन्द्र खासकर प्रेमचन्द की प्रेरणा से ही हिंदी कथा-क्षेत्र में अवतीर्ण हुए। मगर उन्होंने प्रेमचंद की प्रवर्तित धारा का अनुमान न कर मनोवैज्ञानिक ढंग से कहानी की रचना की। फ्रायडीय मनोविज्ञान के साथ जैनेन्द्र में दार्शनिकतापूर्ण विवेचन की प्रवृत्ति भी है। `एक रात`, `ग्रामोफोन का रेकार्ड`, `मास्टर साहब`, `पत्नी`,

`पानवाला`, `विएट्रीस` आदि कहानियों में दमित कामभावना का विस्फोट है। जैनेन्द्रजी की कहानियों के प्रमुख पात्र किसी न किसी प्रकार की मनो-ग्रंथियों से पीड़ित है।

4) चतुरसेन शास्त्री :-

आचार्य चतुरसेन शास्त्री को पांडेय बेचन शर्मा `उग्र` के समान अतियथार्थवादी अथवा प्रकृतवादी लेखकों के वर्ग में रख दिया जाता है। चतुरसेन शास्त्री की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि वे छोटी-से-छोटी सामाजिक तथा ऐतिहासिक घटना को भी आकर्षक तथा मनोरंजक ढंग से प्रस्तुत करते है। उन्होंने इतिहास के विभिन्न युगों- बौद्धकाल, मुगलकाल एवं उत्तर मुगल काल के आधार पर कहानियाँ लिखी है। `अम्बपालिका`, `दुखवा मैं`. `बावर्चिन` आदि कहानियों में इसका चित्रण मिलता है। आचार्य शास्त्रीजी ने सामाजिक एवं राजनीतिक, मनोवैज्ञानिक तथा विविध विषयों से संबंधित कहानियाँ लिखी है।

ब) रांगेय राघव और समकालीन लेखक :-

सन 1947 के बाद हिंदी कहानी क्षितिज पर अनेक कहानी लेखक उभर आये। उपेन्द्रनाथ `अश्क`, अमृतराय, इलाचन्द जोशी, अज्ञेय, यशपाल, चन्द्रगुप्त विद्यालकार, शिवप्रसाद सिंह, नरेश मेहता, धर्मवीर भारती, मोहन राकेश, कमलेश्वर, राजेन्द्र यादव, अमरकान्त, निर्मल वर्मा, मार्कण्डेय, फणीश्वरनाथ रेणू, भीष्म साहनी, मन्नू भंडारी जैसे कहानी लेखकों ने स्वतंत्रता प्राप्ति के पहले की परिस्थितियाँ और बाद की परिस्थितियाँ अपनी कहानियों में लाने का प्रयास किया ।

सन 1950 ई. तक हिंदी कहानियाँ मुख्यत: इन्ही दो धाराओं में बँटकर चलती रही। क्रमश: प्रगतिवादी आन्दोलन रूढ़ होकर प्रचारवादी बनता गया और मनोवैज्ञानिक स्थिति कहानीकारों में भी पश्चिमी प्रभावित कुण्ठा, घुटन और अनास्था बनकर सामने आयी। केवल कहानी के क्षेत्र में ही नहीं समूचे हिंदी साहित्य में जन-चेतना की दिशा देनेवाले अधिकांश साहित्यकार स्वयं दिग्भ्रम के शिकार रहे। सामतशाही और पूँजीवाद कई दूसरे रूपों में प्रकट होने लगे। साहित्यकारों में प्रेरणा अभाव की यह स्थिति रही, लेकिन अधिक समय तक नही। हिंदी के कहानीकार शीघ्र ही नई चेतना से उदबुद्ध होकर नई दिशाओं में चल पड़े। रांगेय राघव जी ने भी इन बदलती परिस्थिती का साथ दिया।

शिवप्रसाद सिंह जी ने अपनी कहानियों नें परिवार के भीतर के अन्तवैयक्तिक संबंधों का चित्रण किया है। जिसमें वे नये मूल्यों की स्थापना के लिए प्रयत्नशील रहे है। उनकी कहानियों में टेंशन और तीक्ष्ण दर्द रहता है। `कर्मनाशा की हार`, `इन्हें भी इंतजार है` जैसे संकलनों में होनेवाली उनकी कहानियों से रांगेय राघव की कहानियाँ अलग लगती है।

मन्नू भण्डारीजी की कहानियाँ पारिवारिक जीवन, पति-पत्नी के संबंधों एवं आधुनिक प्रेम तक ही सीमित है। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद हुए नारी-जीवन में उन परिवर्तनों और आज की तथा कथित आधुनिक्ता पर व्यंग्यपूर्ण प्रहार किया है। `रानी माँ का चबूतरा`, `तीन निगाहों की एक तस्वीर`, `यही सच है`, `क्षय`, `नशा`, `अभिनेता`, `श्मशान`, `ईसा के घर इन्सान` आदि कहानियाँ नारी-जीवन की विभिन्न समस्याओं के मूल कारणों को यथार्थता से स्पष्ट करती है। नारी की विभिन्न समस्या के संबंधों में रांगेय राघव जी की कहानियों से यह कहानियाँ मेल खाती है।

उपेन्द्रनाथ `अश्क` ने अपनी कहानियों में समाज की कुरीतियाँ, कुंठाये, आंदोलन आदि का चित्रण मिलता है। अश्कजी ने अपनी कहानियों में निम्न मध्य वर्ग की समस्याओं की चर्चा की है।उन्होंने किसान-मजदूरों के बारे में ज्यादा नहीं लिखा है। `छींटे`, `काले साहब`, `दो धारा`, `पिंजरा`, `बैंगन का पौधा`, `पलंग`, `आकाश चारी` आदि संकल्नों में रूढ़ियों का विरोध, सामाजिक चेतना और यथार्थ बोध दृष्टिगत होता है। रांगेय राघव ने किसान-मजदूरों की समस्याओं का चित्रण किया है, अश्क जी ने नहीं किया इसीलिए राघव जी की कहानियाँ इनसे अलग है।

अमृतराय की कहानियों में समाजवादी यथार्थ दृष्टिगत होता है। वह ऐसा समाजवादी यथार्थ है जो ऐतिहासिक विकास के क्रम को क्रान्तिकारी दिशा प्रदान करते हुए गतिशील बनाता है। उनकी कहानियाँ `युरोप की विजय`, `जनता के नाम`, `कोरिया का नया भूगोल`, `आजादी की रेल उर्फ वार्निश के पीपे`, `तेलंगाना के वीरों से`, `तिरंगे कफन` आदि में तात्कालिक युग-चेतना को चित्रित किया गया है। यह चेतना समाज-सापेक्ष होने के साथ ही बुद्धिजीवियों के बीच उहापोह की स्थिति का अन्त भी करती है। `दरारें` और `जहालात के धुंधलके में` में विभाजन के पश्चात की स्थिति का मार्मिक चित्रण है। रांगेय राघव

जी की `तबेले का धुंधलका`, `मुफ्त इलाज` इन कहानियों में भी भारत विभाजन के पश्चात की स्थिति का चित्रण है। विभाजन के विषय में अमृतराय की कहानियों से रांगेय राघव की कहानियाँ मेल खाती है।

इलाचन्द्र जोशी जी की कहानियों के विषय दो प्रकार के है एक मध्यवर्गीय ऱ्हासोन्मुखी समाज का जीवन चित्रण और उनका विश्लेषण एवं दूसरे व्यक्ति के अहंभाव का विश्लेषण। प्रथम प्रकार की कहानियों में `चरणों की दासी`, `अनाश्रिता`, `रोगी`, `परित्यक्ता` `होली` आदि कहानियाँ है। इसमें समाज की भिन्न-भिन्न समस्याओं को लाया है। दूसरे प्रकार की कहानियों में दुर्बल प्रकृति और चरित्रवाले व्यक्तियों की विकृत मनोवृत्ति का विश्लेषण कर उनके कारणों को मनोवैज्ञानिक आधार पर ढूँढा गया है। इसका कारण है कि वे अज्ञात चेतना को मानव की संचालिका शक्ति मानते है। यही मान्यता जोशी जी की सम्पूर्ण कहानियों का मूल है।

चन्द्रगुप्त विद्यालंकार जी ने सामाजिक संचेतना को अपनी कहानियों का विषय बनाया है। इनकी अधिकांश कहानियाँ दैनिक जीवन से संबंधित है। सामाजिक समस्याओं का सुन्दर चित्रण उन्होंने किया है। इनकी इस प्रकार की कहानियाँ एकदम सरल, स्वाभाविक एवं विलक्षण वातावरण से युक्त है। `भय का राज्य`, `चन्द्रकला`, `अमावस्या`, `वापसी`, `तीन दिन`, `पहला नास्तिक`, `गहरे अन्धेरे में` आदि इनके कहानी संग्रह है।

भगवतीचरण वर्मा जी की कहानियों में आत्मविद्रोह का स्वर सुनाई देता है। वर्तमान जीवन से वे पूर्णत: असंतुष्ट है। उन्हें अतित और अनागत दोनों पर विश्वास नहीं, पाप-पुण्य, आत्मा-परमात्मा उनके लिए खोखलापन और रूढ़िवादिता है। संघर्षों को पार कर सुख प्राप्त करना और दूसरों को सुख देना ही मानव जीवन का चरम लक्ष्य है। उनकी कहानियों में यही सत्य उभरकर आये है। किसी कहानी में उन्होंने वर्तमान सभ्यता और आधुनिक समाज के खोखलेपन पर प्रहार किया है, किसी में नारी-जीवन के टूटे-फूटे सम्बन्धों को उभारा है। शोषक वर्ग के अत्याचार-अनाचार एवं शोषित वर्ग की कारूणिक अवस्था की उनकी कहानियों का विषय बनी है। `विवशता`, `दो बाँके`, `प्रायश्चित`, `प्रजेन्ट, `उत्तरदायित्व` आदि उनकी उल्लेखनीय कहानियाँ है।

अज्ञेयजी ने क्रान्तिकारी जीवन सम्बन्धी, प्रेम संबंधी और मनोवैज्ञानिक कहानियाँ लिखी है। अज्ञेय जी ने अपनी अधिकांश कहानियाँ निम्न वर्ग व मध्यम वर्ग के लोगों को लेकर लिखी है। `विपथगा`, `परम्परा`, `जयदोल`, `ये तेरे प्रतिरूप`, `कोठरी की बात` आदि इनके कहानी संग्रह है। क्रांतिकारी जीवन से सम्बन्धित इनकी कहानियों से सामाजिक प्रतिबद्धता प्रकट होती है। ब्रिटिश सम्राज्यवादियों से लड़नेवाले और साम्यवादियों के प्रति इनकी सहानुभूति रही है।

यशपाल जी ने चालीस वर्ष की साहित्य-साधना में बहुत लिखा है। यशपाल जी ने हिन्दी-कहानी का राजनैतिक चिन्तन का धरातल और अर्थतांत्रिक व्यवस्था के प्रति एक जागृत दृष्टिकोण प्रदान किया है। पूँजीवाद और हर प्रकार के शोषण के विरोध में खुला विद्रोह प्रकट किया है। `पिंजरे की उड़ान`, `वो दुनिया`, `तर्क का तूफान`, `ज्ञानदान`, `अभिशप्त`, `भस्मावृत्त चिनगारी`, `फूलों का कुर्ता`, `धर्मयुद्ध`, `चित्र का शीर्षक` आदि कहानी संग्रह प्रसिद्ध है। यशपाल जी और रांगेय राघव जी दोनों ही मार्क्सवाद से प्रभावित लेखक है। राघव जी ने यशपाल की प्रगतिशीलता को नई कहानी के साथ जोड़ा है।

इन विभिन्न समकालिन कहानी लेखकों के परिपेक्ष्य में जब हम रांगेय राघव जी की कहानियों को देखते है तो वे उनकी तुलना में अलग दिखाई देती है। रांगेय राघव जी मार्क्सवाद से प्रभावित थे। वे जीवन के माध्यम से कहानी की ओर बढते है। उन्होंने अपनी कहानियों में सर्वहारा वर्ग को प्रधानता दी अन्य समाकालिन लेखकों की कहानियों में सर्वहारा वर्ग की नगण्यता है। उनकी कहानियों के कथानक और पात्र निम्न उपेक्षित एवं गलीज समझे जानेवाले लोगों में से उठाये गये है। यही कारण है कि रांगेय राघव जी की कहानी अपनी समकालिन कहानी लेखकों की तुलना में अलग परिचय देती है।

क) रांगेय राघव की कहानियों का अलगपन :-

डा. रांगेय राघव प्रगतिशील लेखक थे। सन 1947 में उनकी रचनाएँ प्रकाशित होने लगी। स्वतंत्रता-संग्राम, अंग्रेजों की कुटील न्यायव्यवस्था, भारत-पाक विभाजन, महात्मा गांधी की मौत, गरीबी में छटपटाता सामान्य इन्सान आदि को उन्होंने अपनी आँखो से देखा था। सम्पन्न परिवार में जन्म लेकर भी जनसाधारण पर लिखना उनके जीवन का लक्ष्य था। उनकी कुल पचासी कहानियों को गौर से

देखने पर यह बात तुरंत समझ में आती है कि लेखक जनसामान्य की वेदना को वाणी प्रदान करना चाहता है। गरीबों की वेदना को समझने के लिए वे खुद तपती धूप में गरीबों की बस्ती में चक्कर लगाते थे। ``जनजीवन के प्रति मोह का इससे अधिक प्रत्यक्ष प्रमाण और भला क्या हो सकता है कि पर्याप्त ख्याति प्राप्त हो जाने पर भी वे अपने गाँव में जाकर रहे, विदेशी लेखकों और उनकी नकल पर जीनेवाले देशी लेखकों की तरह किसी बडे शहर के बड़े होटलों में नही।``[1]

इसीलिए इनकी कहानियाँ अपने आसपास के समूचे वातावरण और कथासूत्र को एक दूसरे में बुनने में इतनी सफल हुई है कि इन दोनों सूत्रों को अलग करना कठिन हो जाता है। दक्षिण भारत के पात्रों, गूजरों तथा कुम्मारों की कहानियों का वातावरण इतना सहज है कि कहानियों से पाठकों का आसानी से साधरणीकरण हो जाता है। उदाहरण के लिए `आवारा`, `प्रवासी` आदि कहानियाँ देखी जा सकती है।

हिंदी कथा साहित्य में अनेक कथाकारों ने भारतीय समाज के जीवन पर कहानियाँ लिखी है लेकिन उन्होंने उसमें कुछ सीमित पहलुओं का चित्रण किया है। रांगेय राघव जी ने मजदूर, दलित, भीखारी, निम्न मध्य वर्ग, उच्चवर्ग आदि की संवेदनाओं को समझकर कहानियों में यथार्थ लाने का प्रयास किया है।

डा. रांगेय राघव मुलतः मार्क्सवाद से प्रभावित है, किन्तु वे मार्क्सवाद को विकसनशील मानते है। इसीलिए उनकी कहानियाँ किसी विशिष्ट मानव समूह के लिए नहीं तो सारे समाज के लिए लिखी कहानियाँ है। यह इनकी कहानियों का अलगपन है।

अपने परिवेश से ही कथ्यों का चुनाव करके उसे अपने सुक्ष्म विचारों के आधार पर अभिव्यक्त करने का प्रयास राघव जी ने किया है। उन्हें जीवन के प्रति अगाध आस्था है इसीलिए वे कहते है कि मनुष्य का जीवन भी ऐसी ही एक अगम पहाडी है जिसे कोई भी बिजली कितने भी वेग से गिरकर चकनाचुर नहीं कर सकती। उनकी `इन्सान`, `भय`, `घासफूस`, `ईमान की फसल` आदि कहानियों में इसका बोध होता है।

---

1. आधुनिक हिन्दी कहानी साहित्य में प्रगति चेतना, डा. लक्ष्मण दत्त गौतम, पृ. 285

पुरूषसत्ताक पद्धति भारतीय नारी का हमेशा शोषण करती आयी है। अपने सामने पत्नी को हेय माननेवाली पुरूष की स्वार्थी वृत्ति ने स्त्री को पुरूषधिन बनाया है। डा. राघव जी ने अपनी कहानियों में शोषित स्त्री का चित्रण किया है जो न जाने किन-किन जरूरतों के लिए जिन्दगी से नाजायज समझौते कर रही है। देवदासी, नई जिन्दगी के लिए ऐयाश मुर्दे, तबेले का धुंदलका आदि कहानियाँ इस दृष्टि से महत्वपूर्ण है। नारी शोषण के साथ-साथ शोषण को न स्विकारनेवाली, विद्रोह करनेवाली नारी का चित्रण लेखक ने किया है यह उनकी कहानियों का अलगपन है जिसमें गदल, नारी का विक्षोभ, अभिमान, ममता की मजबूरी आदि कहानियों के नाम गिनाये जा सकते है।

गांधीवाद के सिद्धान्तों का आज तक अनेक लेखकों ने पुरस्कार किया है पर डा. राघव जी ने वर्तमान व्यवस्था के क्रम में उन्हें गांधीवाद के ह्रदय परिवर्तन का सिद्धांत मान्य नहीं है। इस दृष्टि से ईमान की फसल, बाप का दोस्त आदि कहानियाँ महत्वपूर्ण है जो डा. राघव जी को समकालीन लेखकों के विचारों से अलग कर देती है।

डा. रांगेय राघव सामाजिक नैतिकता को महत्त्वपूर्ण मानते है। उन्होंने समाज में नैतिकता के प्रश्न को किसी सिमीत दायरे में नही बांधा। प्रेम, विवाह, सेक्स के साथ-साथ उसे अधिक व्यापक स्तर पर देखा। लेखक उन रूढ़िग्रस्त सीमाओं को तोड देना चाहता है जो नारी-पुरूष प्रेम को पाप और विवाह को सौदेबाजी समझते है। राघव जी यौन को एक भूख मानते है और इसीलिए उनकी `आवाज घुटने लगी`, `मैं : ज्ञान के आखर`, `विज्ञान के बोल `आदि कहानियों में विचारों का अलगपन दिखाई देता है।

यौन को राघव जी बलवान मानते है पर किसी भी कहानी में उन्होंने सेक्स की पराकाष्ठा का वर्णन नहीं किया है। ऐसे क्षणों के केवल संकेत देकर वे आगे बढ़ते है। इसीलिए कहानी का भाव तो स्पष्ट होता है पर कही मांसलता नहीं नजर आती। यह उनकी कहानी का एक अलगपन ही है `तबेले का धुंधलका`, `ममता की मजबूरी`, `ऐयाश मुर्दे`, `पंच परमेश्वर` आदि कहानियाँ इस दृष्टि से अलग ठहरती है।

राघव जी ने राजनीति नेताओं, अफसरों, व्यापारियों और विद्वानों के हाथों जो शोषण हो रहा है उसका विक्षोभपूर्ण एक उद्दीप्त चित्रण अपनी कहानियों के शोषक उपर्युक्त चार में से ही है। इनके शोषित इन वर्गों का संघर्ष करते है। मजदूर और किसान को वे क्रान्ति का अग्रदूत मानते है। क्रान्ति के लिए

वे त्याग, संघर्ष और निर्भयता को महत्त्वपूर्ण मानते है। `पाँच गधे`, `बिल और दाना`, `लक्ष्मी का वहन`, `फूल का जीवन`, `कठपुतले`, `नया समाज` आदि कहानियाँ लेखक के विचारों का अलगपन स्पष्ट करती है।

राघव जी बौद्धिकता का समर्थन करते है। इसीलिए रूढियों का खूलकर विरोध करते है। परिवर्तन पर उनकी अगाध आस्था है। पर परिवर्तन को वे बौद्धिकता से ही स्विकार करते है। रूढ़ियों का दास होने से मानव विकास के द्वार बन्द हो जाते है। इसी विचार से उन्होंने अपनी कहानियों में रूढ़ियों का विरोध करके उनपर पुर्नविचार करने का आग्रह किया। `जानवर देवता`, `चकावू का किला`, `पर्तों की पीड़ा`, `इन्सान पैदा हुआ` आदि कहानियाँ इस दृष्टि से अलग है।

इसतरह डा. रांगेय राघव की कहानियों के विषय अलग-अलग है, जिसमें हर संभव विषय को उन्होंने छुआ है। बहुत अच्छी कहानियों के साथ-साथ निहायत साधारण कहानियाँ भी उन्होंने लिखी है। यह भी उनका एक अलगपन है। लेखक को वह मनुष्य की आत्मा का शिल्पी मानते है इसीलिए मानव-कल्याण उनकी कहानी का प्राण है।

ढ - रांगेय राघव का हिन्दी कहानी साहित्य में योगदान :-

बहुमुखी प्रतिभाशाली रांगेय राघव की मातृभाषा तमिल है। दाक्षिणात्य होने पर भी वे हिन्दी के प्रकांड पंडित व प्रसिद्ध लेखक के रूप में हिन्दी साहित्य के इतिहास में अमर हो गए। रांगेय राघव विचारों से `मार्क्सवादी` थे और सन 42 में कम्यूनिस्ट पार्टी के बहुत निकट थे। इसीलिए अपनी कहानियों में मार्क्सीय चिन्तन के अनुकूल वे बता देना चाहते है कि भौतिक समृद्धि मानव-समाज की पहली और मुख्य आवश्यकता है, बाकी चीजें बाद की है।

डा. रांगेय राघव का दृष्टिकोण प्रगतिशील था। इस दृष्टिकोण से वे अपने युग एवं जीवन की समस्याओं की ओर देखते थे। उन्होंने अपने कथानक और पात्र निम्न, उपेक्षित एवं गलीज समझे जानेवाले लोगों में से उठाए है। उनकी कहानियों में युग-बोध की तीखी चेतना का अनुभव होता है। सभ्य शहरी समाज जिस मानवता की ओर ध्यान ही नहीं देता, रांगेय राघव वहाँ के जीवन को उठाते है। उन्होंने

अपनी कहानियों में मध्यवर्ग, निम्न मध्यवर्ग तथा निम्नवर्ग इन सभी का चित्रण किया है। उनकी नजर अछूते क्षेत्रों की ओर रहती थी और वे उसे पूरी सूक्ष्मता के साथ अपनी कहानियों में उतार लेते थे।

डा. रांगेय राघव ने समस्या प्रधान, चरित्र प्रधान, घटना प्रधान एवं वातावरण प्रधान सभी प्रकार की कहानियाँ लिखी है। उन्होंने ऐतिहासिक कहानियाँ भी लिखी है। ऐतिहासिक कहानियों के कथानकों का संबंध ऐतिहासिक नगर आगरा एवं बौद्ध मठों से है। उन्होंने छोटी और लम्बी दोनों प्रकार की कहानियाँ लिखी है। लम्बी कहानियों में भी रोचकता एवं कौतुहल बना हुआ है।

डा. रांगेय राघव के पात्र अत्यंत सजीव है। समाज के सभी वर्गों के पात्र इनकी कहानियों में मिलते है। पात्रों की चरित्रगत विशेषताएँ स्वाभाविक रूपसे उभरी है। पात्रों के क्रिया-कलाप, बातचीत और उनके विषय में दूसरे पात्रों के कथोपकथनों से भी चरित्र-चित्रण किया है। शोषित, दरिद्र, गरीब पात्रों का वर्णन करते हुए वह उनके अपराधों एवं भ्रष्ट आचरण का मूल उनकी गरीबी में मानता है।

डा. रांगेय राघव ने अप्ने समकालिन कहानी लेखकों की तरह पिट-पिटायी बातों को न दोहराकर अलग विषयों का चुनाव करके कहानियाँ लिखी। विषय, शिल्प, शैली सभी तरह के वैचित्र्य से वे हिन्दी कहानी के क्षितिज पर अवतरित हुए। उनकी कहानियों ने हिन्दी कहानी साहित्य को अपने योगदान से ऋणी बनाया है। रांगेय राघव जी ने अपनी कहानियों के माध्यम से मार्क्सवादी विचारों को हमारे सामने रखा। पूँजीपतियों के खिलाफ किसान-मजदूरों का संघर्ष हमारे सामने रखा। द्वितीय महायुद्ध और उससे निर्माण हुई सामाजिक परिस्थिति का भी उन्होंने अपनी कहानियों के द्वारा दर्शन कराया है। स्वतंत्रता के पूर्व तथा पश्चात की परिस्थिती का चित्रण भी उनकी कहानियों में मिलता है। विभाजन की समस्याएँ अपनी कहानियों में राघव जी ने उठाई है। तत्कालिन सामाजिक तथा राजनैतिक परिस्थिति का चित्रण उन्होंने अपनी कहानियों में किया है। यह हिंदी कहानी-साहित्य में उनका योगदान ही है।

डा. रांगेय राघव ने अपनी कहानियों में समाजवादी यथार्थ का चित्रण किया है। उन्होंने वर्गीय दृष्टि से समाज का यथार्थंकन किया है और ऐसा करने में उनका मूल उद्देश्य नए मानव का निर्माण और उसका विकास रहा है। उन्होंने अपनी कहानियों में वर्तमान व्यवस्था के परिवर्तन की आकांक्षा की है। हिंदी कहानी साहित्य में ऐसे विचार नहीं है इसीलिए रांगेय राघव का हिन्दी कहानी साहित्य में योगदान है।

इसतरह हिन्दी कहानी साहित्य में रांगेय राघवजी ने पचासी कहानियाँ लिखकर अपना योगदान दिया है। संख्या में कम ये कहानियाँ गुणवत्ता की कसौटी पर हमेशा श्रेष्ठ सिद्ध होती है। रांगेय राघव दीर्घ चिन्तन, मनन के बाद कहानियाँ लिखते, इन कहानियों ने हिन्दी कहानी साहित्य को आगे बढ़ाया और अपने योगदान से हिन्दी कहानी को नई शक्ल-सूरत भी प्रदान की।

निष्कर्ष :-

डा. रांगेय राघव ने अपनी कहानियों में आजादी के पहले लोगों कें जो सपने थे उनके दुखद अंत की पीडा का चित्रण किया है। मार्क्सवादी विचारधारा को उन्होंने अपनी कहानियों का हिस्सा बनाया। अछूते भाग के कथानकों को अपनी कहानियों में लाकर सभ्य वर्गों को उसका दर्शन दिया। ग्रामीण, दक्षिणी तथा शहर के माहौल से उत्पन्न कहानियों से उन्होंने अपना अलग परिचय दिया है। हिन्दी कहानी साहित्य के इतिहास में सदैव अंकित रहनेवाला रांगेय राघव जी का योगदान महत्त्वपूर्ण और अप्रतिम है।

❋❋❋❋